क्रियासु युक्तैर्नृप चारचाक्षुषो न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः |

अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधुवा हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः ||४||

अन्वय – नृप! क्रियासु युक्तैः अनुजीविभिः चारचाक्षुषः प्रभवः न वञ्चनीयाः। अतः असाधु साधु वा क्षन्तुम् अर्हसि। हितं मनोहारि च वचः दुर्लभम्।

अर्थ – हे राजन्! कार्यों में नियुक्त सेवकों को चाहिए कि वे स्वामियों को, जिनके नेत्र दूत ही हैं (अर्थात जो दूतों के द्वारा देखते हैं), धोखा न दें। इस कारण (मेरे कथन में जो कुछ) अप्रिय या प्रिय वाक्य हो उसे आप क्षमा करेंगे। हितकारी और मन को प्रिय लाग्ने वाले वचन दुर्लभ होते हैं।

शब्दार्थ – नृप! = हे राजन, सम्बोधन, एकवचन

क्रियासु = कार्यों में, सप्तमी बहुवचन

युक्तैः = युक्त किए गए के द्वारा √युज्+क्त, तृतीया, बहुवचन

अनुजीविभिः = अनुचरों के द्वारा, तृतीया, बहुवचन

चारचाक्षुषः = गुप्तचर आंखे हैं जिनकी

प्रभवः = स्वामी प्रथमा, बहुवचन

न = नहीं

वञ्चनीयाः = ठगने योग्य √वञ्च+णिच्+अनीयर्

अतः = इसलिए

असाधु = अप्रिय

साधु = प्रिय

वा = अथवा

क्षन्तुम् = क्षमा करने के लिए √क्षम्+तुमुन्

अर्हसि = समर्थ होते हो। √अर्ह् लट्लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन

हितं = हितकारी प्रथमा, एकवचन

मनोहारि = मनोहारी प्रथमा, एकवचन

च = और

वचः = वचन प्रथमा, एकवचन

दुर्लभम् = दुर्लभ, प्रथमा, एकवचन

व्याख्या - इस पद्य में कवि राजा के लिए गुप्तचरों के महत्त्व को दर्शाया है कि किस प्रकार वे राजा के लिए आँख का काम करते हैं। राजा उन्हीं के म्मध्यम से सम्पूर्ण राज्य की जानकारी प्राप्त करता है। गुप्तचरों का दायित्त्व इस कारण और भी बढ़ जाता है। अपने इस महत्त्वपूर्ण दायित्त्व के निर्वहण के गुप्तचरों को क्षमापूर्वक राजा को सत्य सूचना देनी चाहिए। जब तक राजा सत्य नहीं जानेगा तब तक वह राज-काज को सुचारू ढंग से नहीं चला पाएगा। गुप्तचर ने एक सूक्ति का उल्लेख किया है कि भली लगने वाली और कल्याणकारी वाणी संसार में दुर्लभ होती है। सत्य कड़वा ही होता है।